UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 16 सोना (मंजरी)

समस्त गद्याथों की व्याख्या

पर हिरन यह .... चेष्टाएँ हैं।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'सोना' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी लेखिका 'महादेवी वर्मा' हैं।

प्रसंग – लेखिका का कथन है कि कुत्ता, स्वामी और सेवक का अन्तर जानता है। वह प्यार से बुलाने पर पूँछ हिलाता है और डाँटने पर दयनीय बनकर दुबकता है।

व्याख्या – हिरन कुत्ते के मालिक या पालने वाले के क्रोध को नहीं पहचानता। उसका पालने वाले से डरना मुश्किल होता है। वह अपनी चकित आँखों से पालने वाले से दृष्टि मिलाए रहता है, मानो वह नाराजगी का कारण पूछता हो। हिरन केवल मालिक या पालनकर्ता को अपने प्रति प्रेम ही पहचानता है। जिसकी। अभिव्यक्ति वह अपनी विशेष चेष्टाओं, जैसे-सटकर खड़ा होना, सिर के ऊपर उछल-कूद आदि से करता है।

पाठ का सर (राशि)

लेखिका ने हिरन न पालने का निश्चय किया था। परन्तु एक परिचित से प्राप्त अनाथ हिरन-शावक को पालना पड़ा। उसने इसका नाम सोना रखा। सोना लेखिका के पलंग के पाए से सटकर बैठना सीखे। गई थी। दूध पीकर और चने खाकर वह छात्रावास में जाकर उछलकूद भी करती थी। लेखिका के खाना खाने के समय वह सटकर खड़ी रहती थी। उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे। लेखिका के प्रति स्नेह-प्रदर्शन में वह उसके सिर के ऊपर से छलाँग लगा देती थी। सोना हिलमिल गई थी। एक वर्ष बाद हिरनी बन जाने पर, सोना की आँखों में विशेष आकर्षण उत्पन्न हो गया। एक दिन सोना ने फ्लोरा को अपने चार पिल्लों के साथ विस्मय से देखा।

फ्लोरा सोना के संरक्षण में पिल्लों को छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर चली जाती थी। आँखें खुलने पर पिल्ले भी सोना के पीछे चौकड़ी भरने लगे थे। गर्मी के दिनों में लेखिका बद्रीनाथ की यात्रा पर गई। पालतू जीवों में केवल फ्लोरा ही साथ गई। छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के अभाव में सोना अस्थिर हो गई थी। कोई उसका शिकार न कर ले, इस आशंका से माली ने उसे रस्सियों से बाँध दिया। एक दिन सोना जोर से उछली और रस्सी में बँधे होने के कारण मुँह के बल गिरकर मर गई।

https://www.evidyarthi.in/